(श्रीमती मन्दाकिनी श्रीवास्तव)

परिचय

बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर के कुलगीत की शब्दरचना बस्तर की कवियित्री श्रीमती मन्दाकिनी श्रीवास्तव द्वारा की गयी है, जिसकी धुन भी श्रीममी मंदाकिनी द्वारा रचित है। इनका जन्म 16 नवम्बर सन् 1968 को रायपुर (मध्यप्रदेश, अब छततीसगढ) में हुआ। ये प्राध्यापक प्रोफे. शंकरप्रसाद श्रीवास्तव की ज्येष्ठ पुत्री हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान द्विवेदीयुगीन साहित्यकार बाबू मावलीप्रसाद श्रीवास्तव की पौत्री है। ये एन,एम,डी,सी में कार्यरत श्री संजय श्रीवास्तव की पत्नी है। इनकी शिक्षा1, एमएससी (गणित) डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि. सागर (मध्यप्रदेश) 2. बी.एड बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल एवं3. बी म्यूज़ (गायन)- इंदिरा कला, संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (राजनांदगांव, छ.ग) के रूप में विविध आयामों में हुई।कुछ समस तक इन्होंने शिक्षिका का कार्य किया तथा आकाशवाणी, बैतूल में युववाणी कार्यक्रम की कम्पियर भी रहीं। आकाशवाणी, भोपाल से छत्तीसगढ़ी लोकगीतों के प्रसारण- दल में गायिका के रूप में इनकी सहभागिता रही।

साहित्य सृजनः

1 लेखन - कविता- लेखन से इनकी रचनाधर्मिता आरंभ हुई तथा प्रसिद्ध मासिक पत्र-पत्रिकाओं, वागर्थ, भाषा सेतु, कथाबिंब, रूचिर, सारांश, युद्धरत आम आदमी, हेलो हिन्दुस्तान, विचार वीथि, विवरणी, अक्षर पर्व आदि पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित हुई। कहानी- लेखन के क्षेत्र में भी कदम रखा। इनकी चार कहानियां प्रकाशित हैं एवं क्रम जारी है। गद्यरचना में नजरिया प्रकाशित है, जिसमें जीवन और समाज के विशेष प्रसंगों का मार्मिक चित्रण हैं।

प्रकाशित कृतियांः

अब तक इनकी पांच कृतियां प्रकाशित हो चुकी है-

1. सीप में बंद एहसास, 2. खारे पानी की नदी, 3. सूखे पत्तों में तलाश पानी की (तीनों काव्य संकलन) 4. छुअन सप्त रंग की 'नारी-चेतना पर सम्पूर्ण काव्य है एवं 5. नजरियां (मासिक प्रसंग)- गद्यरचना।

2 सम्पादनः- मावपलीप्रसाद श्रीवास्तव साहित्सपीठ, रायपुर द्वारा प्रकाशित 'विवरणी' (मासिक) में उप-सम्पादक रहीं।

सम्मानः-

1. प्रथम काव्य- संकलन सीप में बंद एहसास के लिए 1. सृजन सम्मान, रायपुर द्वारा 'सृजनश्री' सम्मान।
2. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग द्वारा सम्मान।
3. छुअन सप्त रंग की (काव्य) के लिए उज्जैन की प्रतिष्ठित साहित्यिक- सांस्कृतिक संस्था शब्द- प्रवाह द्वारा इंजीनियर प्रमोद शिरढ़ोणकर 'बिरहमन'- स्मृति नयी कविता सम्मान।
4. विशेषः बस्तर विश्वविद्यालय जगदलपुर के कुलगीत की रचना पर विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान।

अभिरूचियांः-

1. भारतीय शास्त्रीय संगीत- उत्तर हिन्दुस्तानी गायन पद्धति में विधिवत् अभ्यास के साथ- साथ
2. पेंटिग मे महारत हासिल है। इनकी कृतियों में प्रकाशित मुखपृष्ठ एवं अन्य चित्र इनके द्वारा ही निर्मित है।

सम्पर्कः- द्वारा श्री संजय श्रीवास्तव 3/ एन.डी.एस/ 229 भारतीय स्टेट बैंक के पास, किरंदुल, पिन 494556 जिला दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़) मोंः 94242-78372